ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं के आत्म-विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी
रेणुका शर्मा
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
ग्राम - सांकरा (कुम्हारी) जिला - दुर्ग (छ.ग.)

निर्देशक
डॉ. रवीन्द्र भेंडे
(पी.एच.डी. गाईड)
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
ग्राम - सांकरा (कुम्हारी) जिला - दुर्ग (छ.ग.)

1. भूमिकाः-

शिक्षा के चारो ओर समाज के विकास का चक्र चलता रहता है। समाज के आर्थिक राजनितिक तथा अध्यात्मिक व मानसिक विकास के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसके द्वारा बालक में आत्मविश्वास जागृत होता हैं।तथा आत्मविश्वास के कारण बालक जीवन के हर क्षेत्र मे उपलब्धि उच्चतम होती है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक में निहित समस्त शक्तियों और गुणों का दिग्दर्शन होता है जिनका ऐसा होना शिक्षा के बिना असंभव हैं शिक्षा बालकों के अंतनिर्हित गुणों का विकास करके उनमें आत्मविश्वास का संचार करता है और यही आत्मविश्वास उनकी शैक्षिक उन्नति में योगदान देता हैं।

1.1 समस्या :-

वर्तमान संदर्भ में शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत हैं तथा शिक्षा के मार्ग में की बाधाएँ आती है जिससे बालको की उपलब्धि पर प्रभाव पडता है। परन्तु आत्मविश्वास एक ऐसा हथियार है, जिससे बालक कठिन समस्याओं का सामना कर उच्च उपलब्धि को प्राप्त करता हैं। आजकल प्रायः बालको में

आत्मविश्वास कि कमी पाई जाती है, जिसके कारण वे किसी भी क्षेत्र में असफल होने पर आत्महत्या जैसा कार्य करने से भी नही चुकते। अतः इसके आधार पर लघुशोधकर्ता द्वारा छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास का विभिन्न विषयों में प्रभाव का अध्ययन किया हैं।

लघुशोधकर्ता द्वारा ली गई समस्या इस प्रकार है– "ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन"

1.2 संक्रियात्मक शब्द

आत्मविश्वास :–

आत्मविश्वास किसी जीन की तरह व्यक्ति में पैदायशी नही होता है तथा इसके अनुरूप स्वयं को ढाला जा सकता है।

"आत्मविश्वासी छात्र अपनी योग्यता पर भरोसा रखते है और उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करते है।"

जिन छात्रों मे आत्मविश्वास होता है, वे अपने जीवन को नियंत्रित करते है और स्वयं पर भरोसा रखते है, कि वे अपनी इच्छा योजना और उम्मीदों को स्वयं की मेहनत से प्राप्त कर सकते है।

जीवन में असफलता को सफलता में बदलने की केवल एक ही कुजी है आत्मविश्वास। आत्मविश्वास जीवन में सफलता पाने की पहली सीढ़ी है।

एक सैनिक का कहना है – निश्चय कर लो कि तुम यदि सही हो और फिर आगे बढ़ते जाओ पर सारा दिन निश्चय करने ही में व्यतित न हो इसका ध्यान रखो, क्योकि संदेह हमेशा पराक्रम, साहस और आत्मविश्वास से हारता है। यह दृढ़ प्रतिज्ञा बालक के पास भटकता तक नही। जानता है कि वह उसे पॉव तले रौंद डालेगा।

बालक का जीवन के प्रति जैसा दृष्टिकोण होगा उसके अनुरूप ही उसका व्यक्तित्व विकसित होता हैं सबसे उत्तम बनने की आकांक्षा पर सफलता पाने की कामना आदि बातों से बालक मे आत्मविश्वास का विकास होता है। जिसके

फलस्वरूप वह निरंतर उन्नति करता है क्योकि एक सफलता दूसरी सफलता के लिए पथ प्रशस्त कर उसे प्रेरणा देती है और उसे अपने लक्ष्य तक पहुचाती है।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य :-

1. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के कक्षा 12वीं के छात्र एवं छात्राओ के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 12वीं के छात्र एवं छात्राओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के कक्षा 12 वीं के छात्रों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों क कक्षा 12 वीं के छात्राओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 समस्या की परिकल्पनाः-

समस्या को देखते हुए हमने निम्न परिकल्पना का निर्माण किया है-

H_{01} ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो में कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं के आत्मविश्वास मे सार्थक अंतर का पता चलेगा।

H_{02} ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में कक्षा 12वीं के छात्र एवं छात्राओं के मध्य आत्मविश्वास मे सार्थक अंतर का पता चलेगा।

H_{03} शहरी क्षेत्र को शासकीय विद्यालयों में कक्षा 12वीं के छात्र एवं छात्राओ के मध्य आत्मविश्वास मे अंतर का पता चलेगा।

H_{04} ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों मे कक्षा 12वीं के छात्रों के मध्य आत्मविश्वास का सार्थक अंतर का पता चलेगा।

H_{05} ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों मे कक्षा 12वीं छात्राओ के मध्य आत्मविश्वास का सार्थक अंतर का पता चलेगा।

1.5 अध्ययन की परिसीमाए:-

1. अनुसंधान के लिए गरियाबंद जिले के फिंगेश्वर ब्लॉक से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयो को लिया गया है।

2. इस अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के स्कूल लिया गया है।
3. यह अध्ययन गरियाबंद जिला के फिंगेष्वर ब्लाक के छात्र और छात्राओं तक की सिमित है।
4. इस अध्ययन के अंतर्गत विद्यालयों का छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया।
6. यह अध्ययन कक्षा 12वीं के छात्र–छात्राओं तक ही सीमित है।

1.6 संबंधित साहित्य का अध्ययनः –

1.61 भारतीय संदर्भ में –

स्टॉग डिल तथा माना (1959) - ने अपने अध्ययनों में पाया कि नेतृत्व तथा आत्मविश्वास सार्थक रूप से सहसंबंधित है।

वासान एम (1971):- आत्मविश्वास का पोषक रूप में अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि इन व्यक्तियों में अधिक आत्मविश्वास पाया जाता है। जिनकी मानसिक योग्यता अधिक होती है तथा कम आत्मविश्वास वाले व्यक्तियों की मानसिक योग्यता कम पायी गयी है। उच्च आत्मविश्वास वाले व्यक्तियों में बौद्धिक क्रियाकलापों को करने में जोखिम उठाने की क्षमता कर आत्मविश्वास वाले व्यक्तियों की तुलना में अधिक पायी गयी। अधिक आत्मविश्वासी व्यक्तियों में स्वयं के प्रति सम्मान कम आत्मविश्वासी व्यक्तियों की तुलना में अधिक पाया गया।

गुप्ता (1978):- ने अनुसूचित जाति एवं पिछडी जाति के महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि व आत्मविश्वास मापन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया गया कि अनुसूचित जाति के स्नातकोत्तर विद्यार्थी स्वयं की विश्वासी एवं अच्छी उपलब्धिकर्ता के रूप में प्रत्यक्षीकृत करते है।

शर्मा (1997):- ने स्वर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के प्रतिदर्श पर अध्ययन किया और निष्कर्ष स्वरूप उन्होने बताया कि व्यावहारिक आयामों के सार्थक भिन्नता पायी जाती है। अपने अध्याय के अंतर्गत अनुसूचित जाति के

छात्र–छात्राओं को कम सृजनात्मक अधिक सरलता को चाहने वाले कम आत्मविश्वासी पलायनवादी प्रकृति, संवेगात्मक अस्थिरता वाला पाया।

16.2 विदेशी संदर्भ में:–

मैककेन्डलेर्स (1961) ने अपने अध्याय के अंतर्गत पाया है कि जिन छात्र–छात्राओं का निम्न विकास होता है उनमे कभी–कभी वातावरण पर अधिपत्य करने में आत्मविश्वास की कमी पायी जाती है।

कुपजॉक (1972) के अनुसार आत्मविश्वास प्राप्तांक क्षेत्र भी परीक्षा श्रेणी व प्राप्ताकों के संबंध में सर्वाधिक मात्रा में पूर्वकथन करता है।

बेरेजकी और मेजर (1983) ने पूर्व अंतव्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास और लिंग भूमिका पर शोध किया। शारीरिक रूप से अनाकर्षक व्यक्ति आकर्षक व्यक्तियों की तुलना में निम्न आत्मविश्वास वाले होते है। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में शारीरिक प्रभावशीलता ज्यादा होती है।

सेलड्रेक,रिचर्ड (2016):- ने आत्मविश्वास का उनके रूचि उपयोगिता और अभिप्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें न्यादर्श–1523 विद्यार्थी, न्यादर्श प्रविधिः– सिंपल रेण्डम सेम्पलिंग का प्रयोग किया इसमें विज्ञान के छात्र–छात्राओं का चयन किया है। और आंकडों के विश्लेषण के लिए ANOVA का प्रयोंग किया हैं और निष्कर्ष में पाया कि जिन बच्चों के पडने में रूचि है उन बच्चों में आत्मविश्वास उच्च पाई गई।

1.6.3 संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा:–

वायन्न एम. (1971):- अधिक आत्मविश्वास वाले व्यक्ति की मानसिक योग्यता अधिक तथा कम आत्मविश्वास वाले व्यक्ति की मानसिक योग्यता कम होती है। अधिक आत्मविश्वास वाले व्यक्ति में जोखिम उठाने की क्षमता अधिक होती हैं।

स्ट्रांग डिल तथा माना (1959) नेतृत्व तथा आत्मविश्वास सार्थक रूप से सहसंबंधित है।

गुप्ता 1978 अनुसूचित जाति के स्नातकोत्तर विद्यार्थी स्वर्ण जाति के स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थी की तुलना में कम आत्मविश्वासी होते है।

शर्मा (1977) सवर्ण जाति के छात्र–छात्राओं के तुलना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थी कम सृजनात्मक अधिक सफलता को चाहने वाले कम आत्मविश्वासी पलायवादी प्रकृति तथा संवेंगात्मक अस्थिरता वाले होते है।

अग्रवाल (1999) अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं के आत्मविश्वास के माध्यम निम्न स्तर का धनात्मक सह संबंध होता है। तथा अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं के आत्म विश्वास के मध्य नगण्य धनात्मक सहसंबंध होता है।कलाये, अशोक, लेविन तमर और बीज (2000) उच्च आत्मविश्वास वाले छात्रों मे कम्प्युटर सीखने के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति पायी जाती है।

पुखर (2007) शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के सामान्य जाति वाले छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास तथा बुद्धि अधिक होती है। शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जाति के लडकों में शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जाति के लडकियों की तुलना में इच्छा शक्ति उच्च स्तर की होती है।

मैक केन्डेलैस (1961) निम्न आत्म प्रत्यय वाले छात्र–छात्राओं को वातावरण पर आधिपत्य करने में आत्मविश्वास की कमी पायी जाती है।

बेरेजकी और मेजर (1983) शारीरिक रूप से अनाकर्षक व्यक्ति आकर्षक व्यक्तियों की तुलना में निम्न आत्मविश्वास वाले होते है। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में शारीरिक प्रभावशीलता ज्यादा होती है।

1.7 जनसंख्या:–

सार्वभौम का वह भाग जहॉ तक अनुसंधानकर्ता की पहुँच होती है, जनसंख्या कहलाता है तथा इसी जनसंख्या में न्यादर्श का चुनाव किया जाता है। अतः जनसंख्या इकाईयों का समुह होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास का अध्ययन किया गया है और इस अध्ययन में जनसंख्या के लिए गरियाबंद जिले के फिंगेश्वर ब्लाक में स्थित शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

1.8 न्यादर्शः–

शोधकर्त्ता ने गरियाबंद जिले के ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रों के शासकीय महाविद्यालयों का चयन किया हैं। फिंगेंश्वर ब्लाक के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 12 वी में अध्ययनरत 500 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि

द्वारा किया। इसमें ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 250 छात्र-छात्राओं तथा शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के 250 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया हैं।

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं की न्यादर्श तालिका

क्षेत्र	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	40	40	80
शहरी	40	40	80
योग	80	80	160

1.9 न्यादर्श प्रविधि:-

जब कभी किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसमें कुछ इकाई को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्श (प्रतिचयन) कहते है, तथा चुनी हुई इकाई के समुह को न्यादर्श कहा जाता है।

शोध कार्यो में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्यों को पूरा नही किया जा सकता। क्योंकि पूरी जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है। प्रतिदर्श प्रविधि को व्यवहारिक तथा समय धनशक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देते है।

पी.वी. यंग के शब्दो में :- ”एक प्रतिदर्श अपनेक समस्त समुह का लधुचित्र होता है।”

गुड एवं हैट के अनुसार:- ”एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि एक वृद्ध समुह का तुलनात्मक रूप से लधु प्रतिनिधि है।”

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विद्यालय का चयन यादृच्छिकी विधि से किया गया है तथा न्यादर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिकी विधि से किया गया तथा कुल 500 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

1.10 अध्ययन विधि:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं। सर्वेक्षण विधि यह किसी घटना एंव विभिन्न चरो के संदर्भ में उनकी वर्तमान स्थिति का सुचक है सर्वेक्षण विधि निम्न प्रकार के होते है–

(1) विद्यालय सर्वेक्षण विधि

(2) विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि

(3) विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि

(4) सामाजिक सर्वेक्षण विधि

1.11 उपकरण:-

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा प्रदत्त संकलन के लिए अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु यंत्र तथा उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्ही यंत्रों को उपकरण कहते है।

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन ताि अज्ञात प्रदत्त संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान में किसी भी प्रकार के ऑकड़ों के मापन के लिए एक अच्छे योग्य उपकरण का प्रयोग करते है। शोधकर्ता अपनी शोध परिकल्पनाओं के पक्ष या विपक्ष में प्रमाण या साध्य जुटाने हेतु निम्न आधरभूत साधनों को उपयोग में लिया जाता है। वे ही शोध उपकरण कहलाते है।

उपकरणों द्वारा प्रदत्त का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है। इस प्रदत्तों के आधार पर ही किसी शोध कार्य के निष्कर्ष निकाले जाते है। ये विधियॉ शोधकार्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। एक अच्छी उपकरण में निम्न विशेषताएँ होती है।

छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास का परिक्षण करने के लिए शोधकर्तो ने डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित स्वतः बोध (आत्मविश्वास) मापनी का प्रयोग किया हैं, जिसमें कुल 56 प्रश्न है जो आत्मविश्वास का निर्धारण करते है इसकी विश्वसनीयता तथा वैधता अत्यधिक है इसकी विश्वसनीयता .78 तथा .82 है।

1.12 सांख्यिकीय अभिप्रयोगः–

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन में मध्यमान ,प्रमाण विचलन तथा टी मूल्य का प्रयोग किया गया हैं।

1.13 परिकल्पनाओं की पुष्टि–

H_{01} ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो में अध्ययन कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में कोई अंतर नही पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों की आत्मविश्वास का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1	ग्रामीण क्षेत्र के छात्र	80	26.58	8.012	11.67
2	शहरी क्षेत्र के छात्र	80	28.76	7.20	
स्वतंत्रता की कोटि df=158, p<0.05 सार्थक अंतर है					

परिणामों की व्याख्या:–

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रो के विद्यार्थियों का मध्यमान 26.58 एंव प्रमाणिक विचलन 8.012 प्राप्त हुआ। इस प्रकार शहरी क्षेत्रो के विद्यार्थियों का मध्यमान 28.76 एंव प्रमाणिक विचलन 7.20 प्राप्त हुआ तथा दोनो समुहो का टी मूल्य का मान 11.67 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटी 158 के लिए 0.05 स्तर 1.98 है, पर यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रो के छात्रो के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता हैं। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

आकृति क्रमांक 1 (A)

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की मध्यमान एंव मानक विचलन की आकृति तालिका

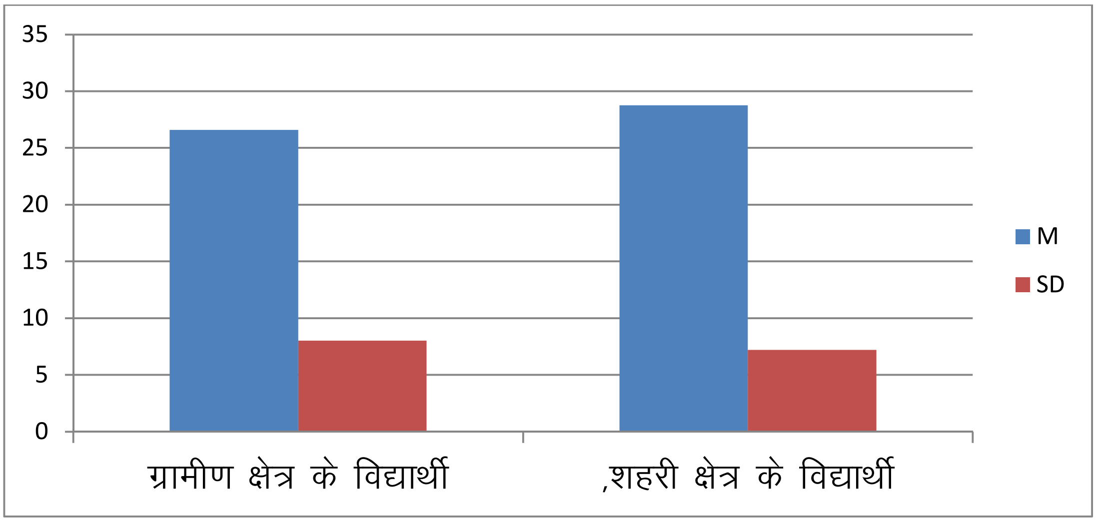

H_{02} ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के कक्षा 12 वीं के छात्र एंव छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 2

ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के छात्र एंव छात्राओं के आत्मविश्वास का सांख्यिकीय विवरण

क्रमांक	विद्यार्थी	छात्र-छात्राओ की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य t

1	छात्र	40	25.83	7.32	1.35
2	छात्राएँ	40	28.23	6.29	
स्वतंत्रता की कोटि df=78, p>0.05 सार्थक अंतर नही है					

परिणामों की व्याख्या:-

उपयुक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रो के शासकीय विद्यालयो के छात्रो के मध्यमान 25.83 एंव प्रमाणिक विचलन 7.32 प्राप्त हुआ। और ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं का मध्यमान 28.23 एंव प्रमाणिक विचलन 6.29 प्राप्त हुआ तथा दोनो समुहो का टी मूल्य का मान 1.35 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 के लिए 0.05 स्तर पर 1ण्99 है अतः यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि ग्रामीण क्षेत्रो के शासकीय विद्यालयों छात्र-छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आकृति क्रमांक 2 (b)

ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं मध्यमान और प्रमाणिक विचलन की आकृति तालिका

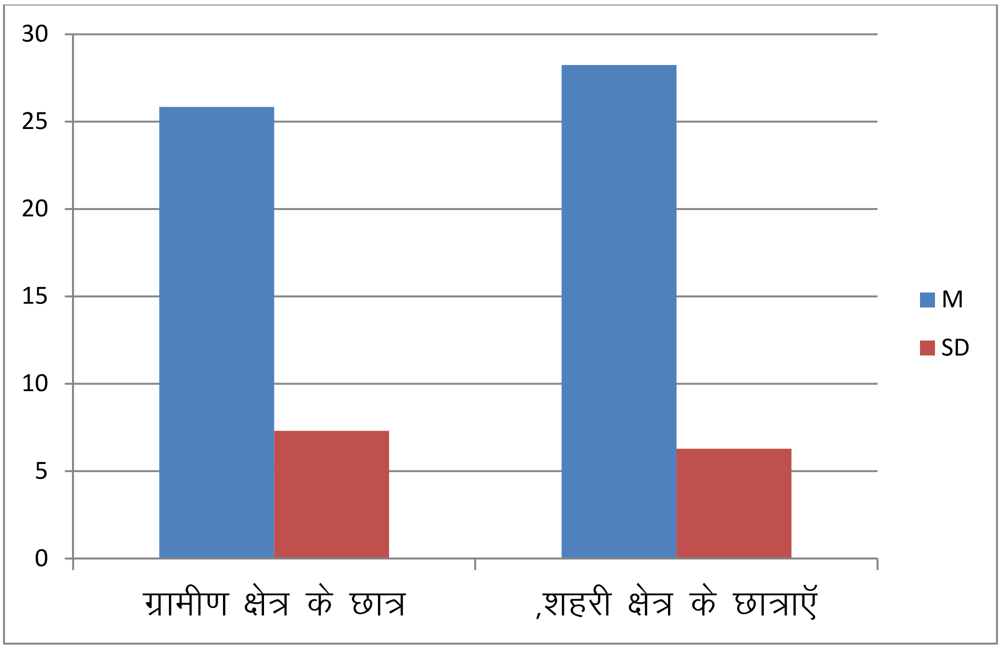

H_{03} शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 12 वीं के छात्र एंव छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 3

शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राएँ के आत्मविश्वास का सांख्यिकीय विवरण

क्रमांक	विद्यार्थी	छात्र-छात्राओ की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य t
1	छात्र	40	27.13	8.62	1.20
2	छात्राएँ	40	29.32	7.30	
स्वतंत्रता की कोटि df=78, p>0.05 सार्थक अंतर नही है					

परिणामों की व्याख्या:-

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के छात्र का मध्यमान 27.13 एंव प्रमाणिक विचलन 8.62 प्राप्त हुआ। और इसी प्रकार क्षेत्र की छात्राओं का मध्यमान 29.32 एंव प्रमाणिक विचलन 7.30 प्राप्त हुआ तथा दोनो समुहो का टी मूल्य का मान 1.20 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 के लिए 0.05 स्तर 1.99 है पर यह सार्थक अंतर दर्शाता है यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आकृति क्रमांक 3(c)

शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं मध्यमान और प्रमाणिक विचलन की आकृति तालिका

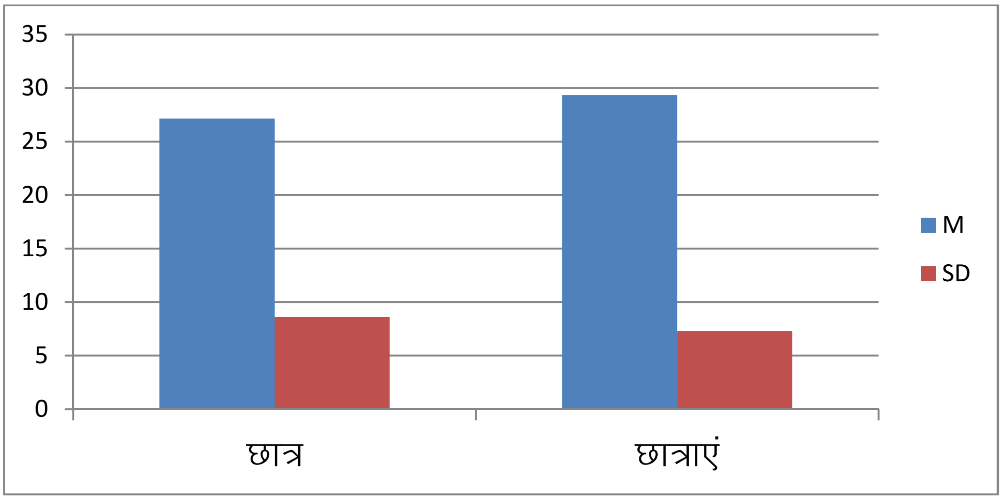

H_{04} ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 12 वीं के छात्र एंव छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।

तालिका क्रमांक 4

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के छात्रो के आत्मविश्वास का सांख्यिकीय विवरण

क्रमांक	विद्यार्थी	छात्र-छात्राओ की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य t
1	छात्र	40	27.38	8.29	1.38
2	छात्राएँ	40	29.89	6.43	
स्वतंत्रता की कोटि df=78, p>0.05 सार्थक अंतर नही है					

परिणामों की व्याख्या:-

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के छात्रो का मध्यमान 27.38 एंव प्रमाणिक विचलन 7.29 प्राप्त हुआ। और इसी प्रकार शहरी क्षेत्र की छात्राओं का मध्यमान 29.89 एंव प्रमाणिक विचलन 6.43

प्राप्त हुआ तथा दोनो समुहो का टी मूल्य का मान 1.38 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 के लिए 0.05 स्तर 1.99 है पर यह सार्थक नही है यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि शहरी क्षेत्र के छात्रों में सार्थक अंतर नही पाया जाता हैं।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आकृति क्रमांक 4 (d)

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के छात्रों मध्यमान और प्रमाणिक विचलन की आकृति तालिका

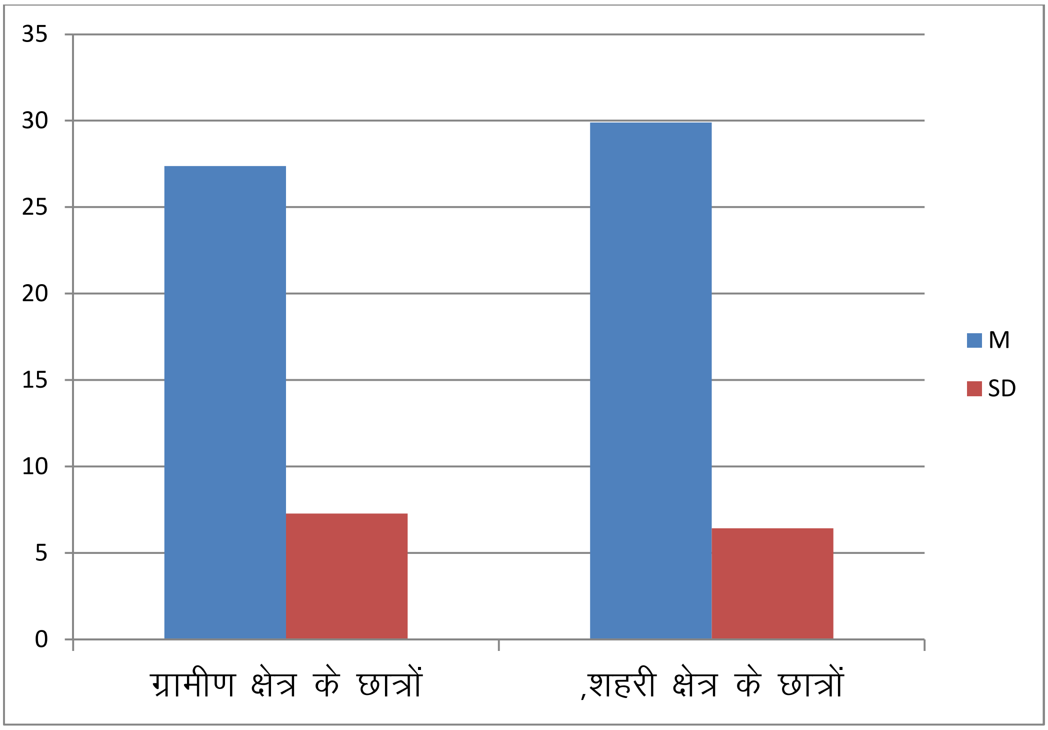

H_{05} ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 11 वी के छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।

तालिका क्रमांक 5

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के छात्राओं के आत्मविश्वास का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	शासकीय विद्यार्थी	छात्र-छात्राओ की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य t
1	ग्रामीण क्षेत्र	40	28.30	9.18	16.32
2	शहरी क्षेत्र	40	29.39	8.23	
स्वतंत्रता की कोटि df=78, p>0.05 सार्थक अंतर है					

परिणामों की व्याख्या:-

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयो के छात्राओं का मध्यमान 28.30 एंव प्रमाणिक विचलन 9.18 प्राप्त हुआ। और इसी प्रकार शहरी क्षेत्र की छात्राओं का मध्यमान 29.39 एंव प्रमाणिक विचलन 8.23 प्राप्त हुआ तथा दोनो समुहो का टी मूल्य का मान 16.32 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि 78 के लिए 0.05 स्तर 1.99 है पर यह सार्थक अंतर दर्शाता है यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रों के छात्रों में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

आकृति क्रमांक 5(e)

ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की आकृति तालिका

ISSN NO: 0005-0601

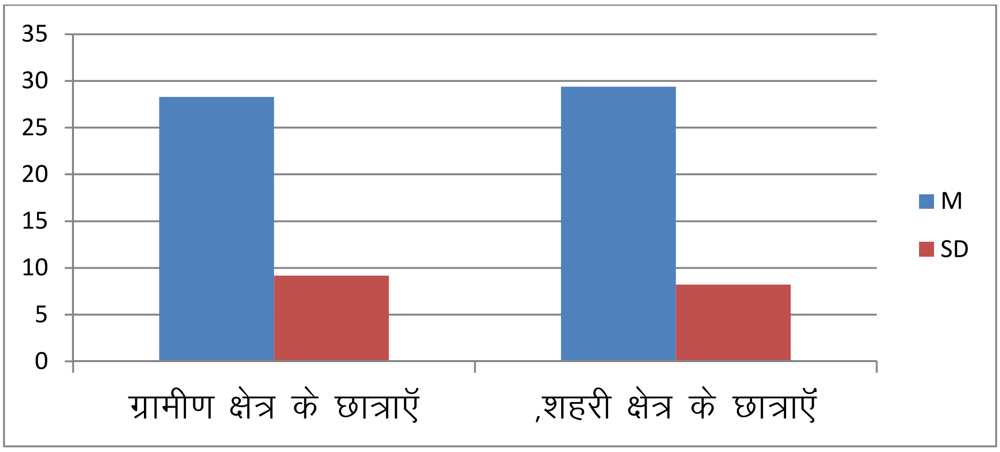

1.14 परिकल्पनाओं का निष्कर्षः-

1. ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रो के शासकीय विद्यालयों के कक्षा 12 वीं आत्मविश्वास के "टी" मूल्य 11.67 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता को कोटि 158 के 0.05 स्तर तक सिद्ध नही हुआ। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान में बहुत कम अंतर हैं। अतः निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के में सार्थक अंतर पाया गया ।
2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एंव छात्राओं के आत्मविश्वास का टी मूल्य 1.35 प्राप्त हुआ। स्वतंयत्रता की कोटि 78 के 0.05 स्तर तक सार्थक सिद्ध नही हुआ। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के छात्र का मध्यमान तथा ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं के मध्यमान में बहुत कम अंतर है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एंव छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
3. शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एंव छात्राओं के आत्मविश्वास का " टी मूल्य " 1.20 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता की कोटि 78 के 0.05 स्तर तक सार्थक सिद्ध नही हुआ। साथ ही शहरी क्षेत्र के छात्र एंव छात्राओं के मध्यमान में बहुत कम अंतर है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी क्षेत्र के छात्र एंव छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
4. ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रो के छात्रों के आत्मविश्वास का "टी" मूल्य 1.38 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता को कोटि 78 के 0.05 स्तर पर सार्थक सिद्ध नही हुआ। तथा ग्रामीण क्षेत्र छात्र शहरी क्षेत्र छात्र के मध्यमान में बहुत कम

अंतर हैं। अतः निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एंव शहरी क्षेत्र के छात्र के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर नही पाया गया हैं।

5. ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्रो के छात्राओं के आत्मविश्वास का "टी" मूल्य 16.32 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता को कोटि 78 के 0.05 स्तर पर सार्थक सिद्ध नही हुआ। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं एंव शहरी क्षेत्र छात्राओं के मध्यमान में बहुत कम अंतर हैं। अतः निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं एंव शहरी क्षेत्र के छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया हैं।

1.15 सुझावः–

प्रस्तुत लघुशोध में ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन के फलस्वरूप शोधकर्ता ने पाया कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को वर्तमान परिवेश में कुशल नागरिकों के निर्माण के लिये बढ़ाना आवश्यक है अतः जो निष्कर्ष निकाला गया है उसके अनुसार कुछ सुझाव इस प्रकार हैः–

- शासन द्वारा बनायी गयी शैक्षिक योजनाओं का ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र में समान रूप से व्यापक प्रचार –प्रसार किया जाये।
- बालको के व्यक्तित्व के विकास के लिए उनकी चेतना को जागरूक बनाने का प्रयास किया जायें।
- बालको के मूल प्रवृतियों का शोधन एंव उत्तम संवेगों का निर्माण तथा स्वः चेतना जागृत करने हेतु प्रोत्साहित करें।
- बालको के स्वः चेतना का विकास करने के लिए उनकी रूचियों व क्षमताओं के अनुसार संगीत नृत्य अभिनय आदि की शिक्षा देने का प्रयास किया जायें।
- ग्रामीण तथा शहरी शासकीय विद्यालय के मध्य सुविधा एंव व्यवस्था की दृष्टि से एक समान वातावरण निर्मित किया जायें।
- लडकियों की शिक्षा के लिए अधिक पर्यावरण बनाने की नीतियाँ विकसित की जाये।
- प्रत्येक विद्यार्थी का शैक्षिक एंव शिक्षण स्तर गतिविधियों में अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित हो।
- प्रत्येक विद्यार्थी की रूचि योग्यता तथा शिक्षण स्थिति के अनुसार उन्हें प्रोत्साहन दे।

1.16 अनुकरणीय अध्ययनः-

प्रस्तुत विषय में पहले भी अनुसंधान कार्य संपादित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त शोधकर्ता के मनन के आधार पर इस अध्ययन किये जा सकते हैं।

- ❖ शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया जा चुका हैं।
- ❖ अंग्रेजी माध्यम एंव हिन्दी माध्यम में विद्यार्थियों की आत्मविश्वास पर अध्ययन।
- ❖ अनुसूचित जाति एंव सामान्य जाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर अध्ययन।
- ❖ उच्च उपलब्धि एंव निम्न उपलब्धि माध्यम के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर अध्ययन।
- ❖ शैक्षिक संस्थानों एंव व्यवसायिक संस्थाओं में शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन।

1.17 संदर्भित ग्रंथ-सूची

- कपिल एच. के. (1984):- अनुसंधान विधियाँ ¬, आगरा, हरि प्रसाद भार्गव पृ.सं. (120-118)
- राय. पी. (1985). अनुसंधान परिचय, प्रकाशक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा पृ.सं. (285-298)
- सक्सैना एन.आर.स्वरूप (2012).शिक्षा के दार्शनिक एंव समाजशास्त्रीय़ सिद्धांत, सूर्या पब्लिकेशन आगरा पृ.सं. (29,87,88)
- सरीन एंव सरीन (2007) शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ ,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ.सं. (136-138)
- शर्मा आर.ए.एंव शर्मा एच.एस. (2010) शिक्षा के दाशर्निक और समाजशास्त्रीय आधार आगरा-2 राधा प्रकाशन पृ.सं. (6-20)
- भट्टाचार्य डॉ. जी.सी. अध्यापक शिक्षा श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2 पृ.सं. (45, 59, 239, 455)
- अग्रवाल जे.सी. शैक्षिक तकनीक के मुल आधार अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृ.सं. (16, 67, 351, 356)
- सक्सैना एन. आर. स्वरूपः- शिक्षा के दार्शनिक एंव समाजशास्त्रीय़ सिद्धांत, सूर्या पब्लिकेशन आगरा पृ.सं. (29, 87, 88, 124)
- राय. पी. (1985). अनुसंधान परिचय, प्रकाशक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा पृ.सं. (290-298)

- भटनागर अ भटनागर मी.,भटनागर ए.वी. (2006) अधिगमकर्ता का विकास एंव शिक्षण अधिगम प्रक्रिया आर.लाल.बुक डिपो गवर्नमेंट इंटरकॉलेज मेरठ।
- पाण्डेय रामशुक्ल एंव मिश्रा क. (2006) उदियमान भारतीय समाज में शिक्षक आगरा पब्लिकेशन पृ. (130-35)
- त्रिपाठी, मनोरंजन एंव श्रीवास्तव,एस.के(2012):- आत्मविश्वास का शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन, गुरूकूल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ योग एंव ब्लाइड सांइस volume:1,ISSN-2278-5159.
- वर्मा डॉ. रोहतास कुमार एंव सरोज कुमारी (2016):- प्राइमरी स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन, श्री कृशण कॉलेज ऑफ एडुकेशन पाली, मोहेंदरगढ. volume:1, ISSN-2250-1991
- वाई.वनजा,एंव डी.गीथा (2017):- हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की नियंत्रण एंव आत्मविश्वास का अध्ययन का इनटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च-ग्रंथालय, volume etal,vol-5 (ISSN-2350-0530(0), ISSN2394-3629 (P).
- शेनड्रेक, रिचर्ड (2016):- हाई स्कूल पर आत्मविश्वास का उनके रूचि उपयोगिता और अभिप्रेरणा एजुकेशनल रिसर्च 76 (50-65) www.elsevier.com/locate/ejdures London University.
- काकीर, ओजलेम (2012):- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और कम्प्यूटर अभिवृत्ति पर अध्ययन www.sciencedirect.com Ankara University Turkey.
- गुरलेर, इस्मैल (2015):- विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा शिक्षण बोलने का कौशल और आत्मविश्वास में संबंध का अध्ययन, CurrRes Sci (2015) 1,14-19 Agrilbrahim University Turkey.